LIVE

NET JRF Solutionist

Daily Live 12:00 PM

FILLERFORM LIVE

NTA UGC NET 2022

हिंदी साहित्य(PAPER -2)

इकाई-5

(हिंदी कविता) भाग-3(Part-2)

विद्यापति और उनकी पदावली

BY JYOTI MA'AM

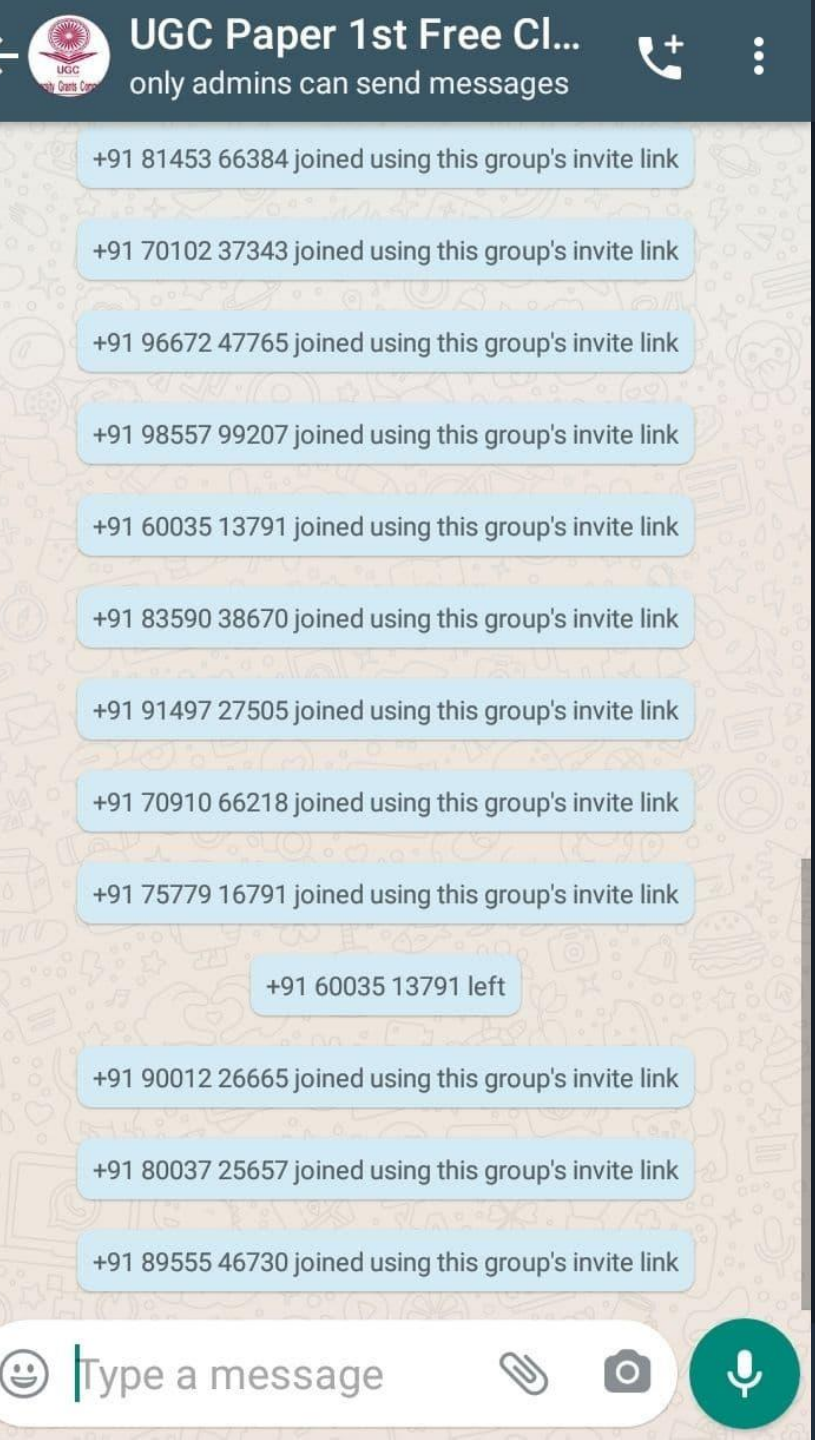
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast
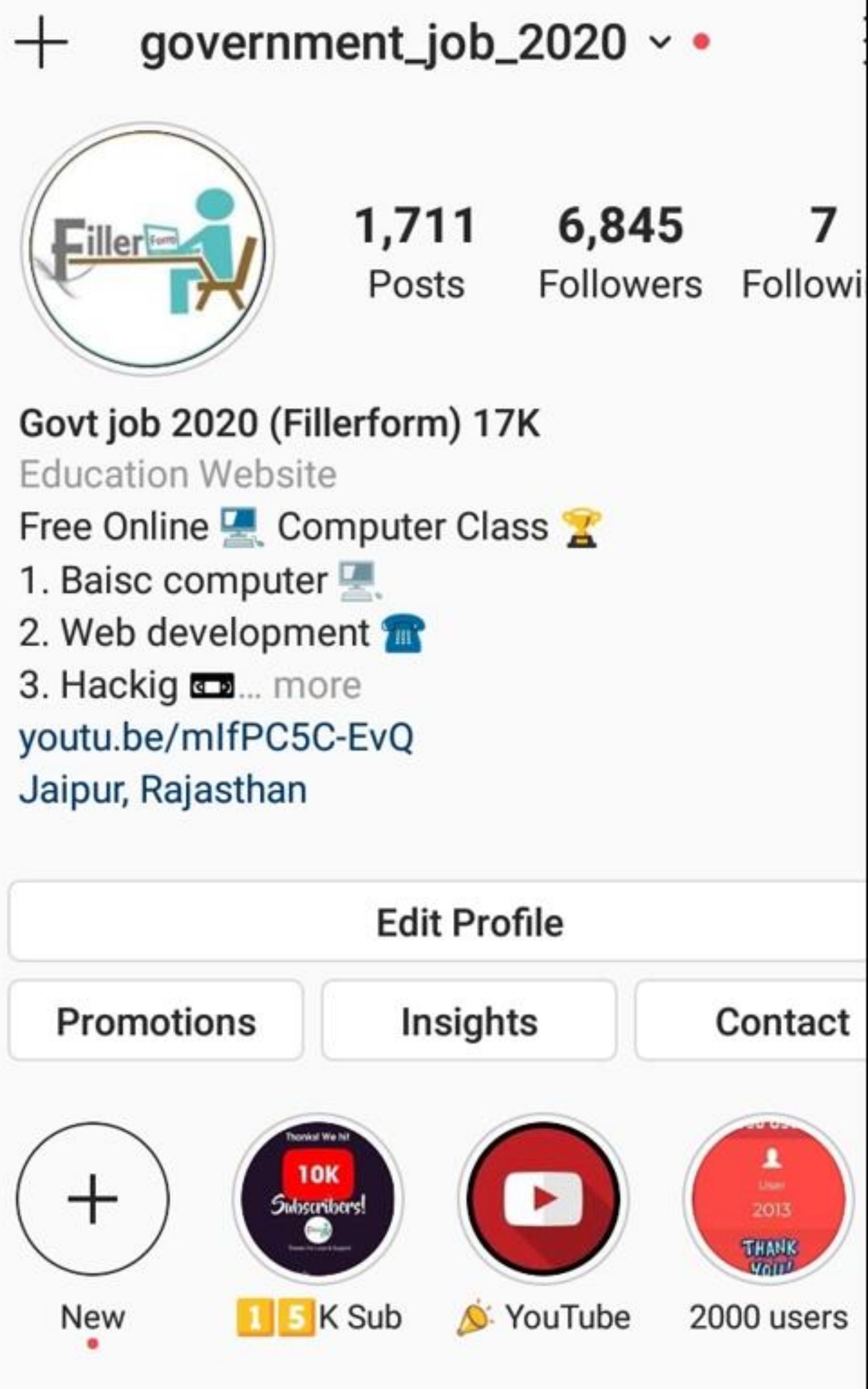
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

- Free Notes
- Live Class
- 5000+MCQ+PYQ
- Free Books

100% OFF

fillerform

इकाई – V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीरखुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 - 25

कबीर – (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या – 160 - 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार – (सं.- राम चन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास – रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई – (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) – दोहा संख्या 1 – 50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 – 30

मीरा – (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) – प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन – कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल – नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

8209837844 www.ugc-net.com

हिंदी कविता

विद्यापति और उनकी पदावली

संपादक :- डॉक्टर नरेंद्र झा

पद संख्या 1 से 25

8209837844 www.ugc-net.com

विद्यापति और उनकी पदावली

(पद संख्या 1 से 25) संपादक :- डॉक्टर नरेंद्र झा

1.विद्यापति का जन्म 1350 ईस्वी में बिहार प्रांत के दरभंगा जिले के विपसी नामक गांव में हुआ |

2. विद्यापति के गुरु का नाम पंडित हरि मिश्र था|

3. विद्यापति तिरहुत के राजा शिव सिंह और कीर्ति सिंह के राज दरबारी कवि थे |

4. इन्हें श्रृंगार रस के कवि भी कहा जाता है |

8209837844 www.ugc-net.com

5. विद्यापति शैव संप्रदाय के कवि थे|
6. इनकी सर्व प्रमुख रचनाएं कीर्तिलता, कीर्तिपताका और पदावली है|
7. कीर्ति लता की रचना भृंग- भंगी संवाद के रूप में हुई है|
8. उनकी मृत्यु 1450 ई० में हुई है

9. इनके पितामह जयदत्त संत थे। वे योगेश्वर नाम से विख्यात थे।

10. पत्नी का नाम- चंदादेवी (चंपती) देवी था।

11. राजा शिवसिंह ने विद्यापति को 'विपसी' गाँव दान में दिया था। राजा शिवसिंह ने विद्यापति को 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया था।

8209837844 www.ugc-net.com

पद संख्या:1

नन्दक नन्दन कदम्बक तरु-तर धीरे-धीरे मुरली बजाव।
समय संकेत निकेतन बइसल, बेरि बेरि बोली पठाब।।
सामरि तोरा लागि, अनुखन विकल मुरारि।।
जमुनाक तिर उपवन उद्वेगल, फिरि फिरि ततहि निहारि।
गोरस बेचत अवइत जाइत, जनि जनि पुछ बनमारितो हे मतिमान, सुमति!
मधुसुदन बचन सुनह किछु मोरा
भनइ विद्यापति सुन वर जौरित वन्दह नन्द-किसोरा ।।1।।

पद संख्या: 2

श्री राधा की वंदना

देख-देख राधा रूप अपार।
अपुरूब के बिहि आनि मिला ओल, खिति-तल लावनि-सार।।
अंगहि अंग-अनंग मुरछायत, हेरए पडए अथीर।
मनमथ कोटि-मंथन करू जे जन, से हेरि महि-मधि गीर।।
कत कत लखिमी चरन-तल ने ओछाए, रंगिनी हेरि विभोरि।
करू अभिलाख मनहि पद पंकज, अहोनिसि कोर अगोरि ।।2।।

8209837844

पद संख्या: 3

www.ugc-net.com

वयः संधि

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल स्त्रवन क दुहु लोचन लेल।
बचन क चातुरि लहु-लहु हांस, धरनिये चाँद कएल परगास।।
मुकुर लई अव करईं सिंगार, सखि पूछइ कइसे सूरत-विहार।।
निरंजन उजर हेरई कत बेरि, हसइ से ऊपन पयोधर हेरि।।
पहिल बदरि-सम पुन नवरंग, दिन-दिन अनंग अगोरल अंग।।
माधव पेखल अपुरूप बाला, सैसव जौवन दुहु एक भेल।
विद्यापति कह तुहु अंगे आनि दुहु एक जोग हक के कह संयानि।।3।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 4

पहिलें बदरि कुच पुन नवरंग, दिन दिन बाढए पिडए अनंग।।
से पुन भए गेल बीज कपोर, अब कुज बाढल सिरिफल जोर।।
माधव पेखल रमनि संधान, धाटहि भेटल करत सिनान।।
तनसुक सुबसन हिरदय लागि, जे पुरुष देखल तेकर भागि।।
उर हिल्लोलित चाँचर केस, चामर झाँपल कनल-महेस।।
भनई विद्यापति सुनह मुरारि सुपुरुख बिलसए से बरनारी।।4।।

पद संख्या: 5

खने-खन नयन कोज अनुसरई, खने खन बसन धूलि तनु भरई।।
खने खन दसन-छठा छुट हास, खने खन अधर भागे गहु वास।।
चउकि चलए खने खन चलु मंद, मनमथ-पाठ पहिल अनुबंध।।
हिरदय-मुकुल हेरि हेरि थोर, खने आँचर दए खने भोर।।
बाला सैसव तारुण भेट, लखए न परिअ जेठ कनेठ।।
विद्यापति कह सुन वर कान, तरुनिम सैसव चिन्हइ न जान।।5।।

पद संख्या: 6

कि आरे! नव जौबन अभिराम।
जत देखत तत कहए न पारिअ, छवो अनुपम एक ठामा।।
हरिन इंदु अरविन्द करिनि हेम, पिक बूझल अनुमानी।।
नयन बदन परिमल गति तन रूचि, ओं अति सुललित बानी।।
कुच जुम परसि चिकुर फुजि परसल, ता अरुझाथल हारा।।
जनि सुमेरु उपर मिलि उगल, चाँद बिहुन सब तारा।।
लोल कपोल ललित मनि-कुंडल, अधर बिम्ब अध जाई।।
भौंह भ्रमर, नासापुट सुंदर से देखि फिर लनाई।।
मनइ विद्यापति से बर नागरि, आन न पराए कोई।।
कंसदलन नारयन सुंदर, तसु रंगिनी पए होई।।
आहे-हे अहा! कि-कैसा।।6।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 7

माधव, की कहब सुन्दरि रुपे।
केतेक जतन बिहर आनि समारल देखल नयन सरूपे।।
पल्लव-राज चरन-जुग सोभित गति गजराज क भाने।
कनक-कदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने।।
मेरु उपर दुई कमल फुलायत नाल बिना रूचि पाई।
मनिमय हार धार बहु सुरसरि तओ नहि कमल सुखाई।।
अधर बिम्ब सन, दसन दाडिम बिजु रबि ससि उगथिक पासे।
राहु दूर बस नियरो न आबथि तै नहि करथि गरासे।।
सारंग तसु समधाने।
सारंग ऊपर उगद दस सारंग, केलि करथि मधुपाने।।
भनइ विद्यापति सुन बर जौबति एहन जगत नहि आने।
राजा सिवसिंघ रूप नारायण-लखिमा देई पति भाने।।7।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद संख्या: 8

चाँद-सार लए मुख-घटना करू, लोचन चकित चकोर।
अमिय धोय आँचर धनि पूछलि दह दिसि भेल उंजोरे।।
कामिनि कोन गढ़ली।
रूप सरूप मोयं कहि इत असंभव, लोचन लागि रहली।।
गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए, माझ-खानि खीनी निमाई।
भाजि जाइत मनसिज धरि राखलि, त्रिबलि लता अरुझाई।।
भनइ विद्यापति अद्भुत कौतुक ई सब बचन सरूपे।
रूप नारायण ई रस जानथि सिवसिंध मिथिला भूपे।।8।।

पद संख्या: 9

जहाँ-जहां पग जुग धरई। तहि-तहि सरोरुह झरई।।
जहां-जहां झलकत अंग। तहि-तहि बिजुरि-तरँग।।
कि हेरल अपरुब गोरी। पैइठल हिय मधि मोरी।।
जहां-जहां नयन बिकास। तहि-तहि कमल-प्रकाश।।
जहां लहु हास-संचार। तहि-तहि अमिय-बिकार।।
जहां-जहाँ कुटिल कटाख। ततहिं मदन-सर लाख।।
हेरइत से धनि थोर। अब तिन भुवन अगोर।।
पुनु किए दरसन पाब। अब मोहे इत दुःख जाब।।
विद्यापति कह जानि। तुअ गुन देहब आनि।।9।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 10

अवनत आनन कए हम रहलिहु, बारल लोचन छोर।
पिया मुख-रूचि पिबय धाओल, जनि से चाँद चकोर।
ततहु सयं हठ हटि मो आनल, धएल चरण राखि।
मधुप मातल उड़ए न पारए, तइअओ पसारए पांखि।
माधव बोलल मधुर बानी, से सुनि मुंदु मोयं कान।
ताहि अबसर ढाम बाम भेल, धरि धनू पंचबाण।
तनु पसेब पासाहनि भासलि, पुलक तइसन जागु।
चूनि-चुनि भए कांचुअ फाटलि, बाहु बालआ भांगु।
भन विद्यापति कम्पित कर हो, बौलल बोल न जाए।
राजा सिंवसिंघ रूपनारायन, साम सुंदर काय।।10।।

पद संख्या: 11

प्रथमीही अलक तिलक लेब साजि। चंचल लोचन काजर आंजि।।
जाएब बसन आंग लेब गोए। दूरहि रहब तें अरथित होए।।
मोरि बोलब सखि रहब लजाए। कुटिल नयन देब मदन जगाए।।
झांपब कुच दरसाओब आध। खन-खन सुदृढ़ करब निबि-बाँध।।
मान करए किछु दरसब भाब। रस रखब ते पुनु पुनु आब।।
हम कि सिखा ओबि अओं रस रंग। अपनहि गुरु भेए कहत अनंग।।
भनई विद्यापति ई रस गाब। नागरि कामिनि भाब बुझाव।।11।।

पद संख्या: 12

सुंदरि चललिह पहुघर ना। चहु दिस सखि कर धर ना।।
जाइतहु लागु परम डर ना। जइसे ससि काँप राहु डर ना।।
जाइतहु हार टूटिए गेल ना। भूखल बसन मलिन मेल ना।।
रोए रोए काजर दहाए देल ना। अदकंहि सिंदूर मेटाए देल ना।।
भनई विद्यापति गाओल ना। दुख सहि सहि सुख पाओल ना।।12।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद संख्या: 13

बिरह व्याकुल बकुल तरुतर, पेखल नन्द-कुमार से।
नील नीरज नयन सयं सखि, ढरइ नीर अपार रे।।
पेखि मलयज-पंख मृगमद, तामरस घनसार रे।
निज पानि-पल्लव मूँदि लोचन, धरनि पड़ असंभार रे।।
बहइ मंद सुगंद सीतल, मंद माल्या-समीर रे।
जनि प्रलय कालक प्रबल पाबक, दहक सून सरीर रे।।
अधिक बेपथ टूटी पड़ खिति, मस न मुकुता-माल रे।
अनिल तरल तमाम तरुवर, मुंच सुमनस जाल रे।।
मानि-मनि तजि सुदति चलु जहि, सए रसिक सुजान रे।
सुखद स्त्रुति अति सरस दंडक, कवि विद्यापति भान रे।।13।।

पद संख्या: 14

मधु सम बचन कुलिस सम मानस, प्रथमहि जानि न भेल।
अपन चतुरपन पिसुन हाथ देल, गुरुअ गरब दूर गोल।।
सखि हे, मंदप्रेम परिणाम।
बड बए जीवन कएल अपराधिन, नहि उपचर एक ठामा।।
झाँपल कूप देखहि नहि पारल, आरति चललहु धाई।।
तखन लघुगुरु किछु नहि, गुनल अब पछताबक जाई।।
एक दिन उछलहु आन मान हम, अब बुझिल अबगहि।।
अपन मूंड अपनें हम चांछल, दोख देब गए काहि।।
भनई विद्यापति सुनु वर जौबति, चित गनब तहि आने।।
पेमक कारन जीउ उपेखिए, जग जन के नहि जाने।।14।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद संख्या: 15

माधव, दर्ज्जय मानिनी-मानि।
बिपरित चरित पेखि चकरित भेल, न पूछल आधहु बानि।।
तुअ रूप साम अखर नहि सुनए, तुअ रूप रिपु सम मानि।।
तुअ जन सयं सम्भास न करई, कइसे मिलाइब आनि।।
नील बसन बर, कंचन चुरि कर, पौतिक माल उतारि।।
करि-रद चुरिकर मोति माल बर, पहिरल अरुनिमसारि।।
असित चित्र उर पर छल, मेटल मलयज देह लगाय।।
मृदपद तिलक धोइ दृंगचल, कच सयं मुख लए छपाइ।।
एक तील छल चारु चिबुक पर निंदी मधुफ्सुत सामा।।
तृण-अग्रें करि मलयज रजल, ताहि छपाओल रामा।।
जलधर देखि चन्द्राताप झाँपल, सामरि सखि नहि पास।तमाल तरु गन चूना लेपल, सिखि पिक दूरि निबास।।
मधुकर उर धनि चम्पक-तरु तल, लोचन जल भरिपूर।सामर चिकुर हेरि मुकुर पटकल, टूटि भए गेल सत चूर।।
तुअ गुन-गान कहए सुक पंडित, सुनतहि उठल रोसाइ।।पिंजर झटकि फटकि पर पटकत, धाए धएल तह जाइ।।
मेरु सम मान सुमेरु कोप सम, देखिभेल रेनु समानी।।विद्यापति कह राहि मनाएब, आपु सिधारह कान।।15।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 16

माघ मास सिरि पंचमी गंजाइली, नवम मास पंचम हरुआई।
अति घन पीड़ा दुख बड पाओल, वनसपति भेलि घाई है।।
सुम खभ बेर सुकुल पक्ख हे, दिनकर उदित-समाई हे।
सोरह सम्पुन बतिस लखन सह, जनम लेल ऋतुराई हे।।
नाचए जुवतिजना हरखित मन, जनमल बाल मधाई हे।
मधुर महारस मंगल गाएब, मानिनी माँ उड़ाई हे।।
वह मलयानिल ओत उचित हे, नवघन भओं उजियारा।
माधबि फेल भेल मुकुता तुल ते देल बंदनबारा।।
पीअरि पांडरि महुअरि गाएब, काहर कार धतूरा।नागकेसर-संखि धून पूर, तकर ताल समतूरा।।
मधु लए मधुकर बालक दरहलु, कमल-पंखड़ी लाई।पओनार तोरि सूत बाँधलि कटि, केसर कएलि बघनाई।।
नव नव पल्लव सेज ओछावल, सिर देल कदम्बक माला।बैसलि भ्रामरी हरउद गाएब, चक्का चंद निहारा।।
कनक केसुअ सुति-पत्र लिखिए हलु, रासि नछत कए लोला।कोकिल गनित-गुनित भल जानए, रितु बसंत नाम थोला।।

x x x

बाल बसंत तरुण भए धओल, बढाए सकल संसारा।दखिन पवन घन अंग उगारए, किसलय कुसुम परागे।
सुललित हार मंजरि घन कज्जल, अखितौ अंजन लागे।।
नव बसंत रितु अगुसर जौबति, विद्यापति कवि गावै।राजा सिवसिंध रूपनारायण, सकल कला मनभावै।।16।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद संख्या: 17

नव वृन्दावन नव नव तरुगन, नव नव विकसित फूल।
नवल बसंत नव मलयानिल, मातल नव अलि कूल।।
विहरई नवल किशोर।कालिंदी-पुलिन कुंज वन सोभन नव नव प्रेम-विभोर।।
नवल रसाल-मुकुल मधु मातल, नव कोकिल कूल गाय।
नवयुवती गन चित उमता अई, नव रस कानन धाय।।
नव जुबराज नवल बर नागरि, मीलए नव नव भांति।
निति निति एसन नव नव खेलन, विद्यापति मति माति।।17।।

पद संख्या: 18

नाचहु रे तरुनी तजहु लाज। आएल बसंत रितु बनिक राज।।
हस्तिनि, चित्रिन, पदुमिनी नारि। गोरी सामरीं एक बूढि बारि।।
बिबिध भांति कएलन्हि सिंगार। पहिरल पटोर गृम झूम हार।।
के ओ अगर चन्दन घसि अर कटोर। ककरहु करपुर खोईदां तमोर।।
कें ओ कुमकुम मरदाब आंग। ककरहु मोतिअ भल छाज मांग।।18।।

पद संख्या: 19

मधुपुर मोहन गेल रे, मोरा विहरत छाती।गोपी सकल बिसरल रे, जत छल अहिबाती।।
सूतल चलहूँ अपनगृह रे, निंदइ गेलऊँ सपनाई।करसौ छूटल परसमनि रे, कोन गेल अपनाई।।
कत कहबो कत सुमिरब रे, हम मरिए गरानि।आनक धन सों धनबंति रे, कुबजा भेल रानि।।
गोकुल चान चकोरल रे, चोरी गेल चंदा।बिछुडि चललि दुहु जोड़ी रे, जीब दद गेल धंदा।।
काक भाख निज भारवह रे, पहु आओत गोरा।खीर खांड भोजन देब रे, भरि कनक कटोरा।।
भनइ विद्यापति गाओल रे, धैरज धर नारी।गोकुल होयत सोहा ओन रे, फेरि मिलत मुरारी।।19।।

पद संख्या: 20

मदन बदन बड पिया मोर, बोलडछ अबहु देहें बरबोधी।।
चौदिस भमर मम कुसुम-कुसुम रम, निरीति माँजरि पीवई।।
मेद पवन चल पिक कछु कछु कह, सुनि बिरहिनी कैसे जिबइ।।
सिनेह अछल जल हम भेव न टूटत, बड बोल जत सब थीर।।
अइसन के बोल दहु निज सिम तेजी कहु, उछल यथोनिधि नीर।।
भनइ विद्यापति अरेरे कमलमुखी, गुनगाहक पिया तोए।
राजा सिवसिंघ रूपनारायण, सहजे एको नहिं भारो।।20।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 21

सारिन हे हमर दुखद नहि ओर।
ई भर बादर माह भादर, सून मन्दिर भोर।।
झांपि घन गरजन्ति संतत, भुवन भरि वरसंतिया।
कंत पाहुन काम दारुन, सघन खर सर हंतिया।।
कुलिस कत सत पात मुद्रित, मयूर नाचत मातिया।
मत्त दादुर डाक डाहुक फाटि जायत शतिया।।
तिमिर दिग भरि पौरियामिनि, अथिर बुजुरिक वांतिया।
विद्‍यापति कह कइसे गमाओब, हरि बिना दिन-रातिया।।21।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 22

अनुखन माधव माधव सुमरइत, सुंदरि भेल मधाई।
ओ निज भाव सुभावहि विसरल, अपने गुन लुबुधाई।।
माधव अपरूप तोहर सिनेह।
अपने बिरह अपन तनु जरजर जिबइत भेलि संदेह।।
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि, छल-छल लोचन पानी।
अनुखन राधा-राधा रटइत, आधा-आधा बानि।।
राधा समं जब पुनतहि माधव, माधव सयं जब राधा।
दारुण प्रेम तबहिं नहि टूटत, बाढ़त बिरहक बाधो।।
दुहु दिस दारु-दहन जैसे दगधईम आकुल कीट परान।
ऐसन बल्लभ हेरि सुधा मुखि, कबि विद्यापति भान।।22।।

पद संख्या: 23

नहि करब बर निरमोहिया।
बिता भारी तन, बसत न तिन्हाका, बघछल काँख तर रहिया।।
बन बन फिरषि मसान जगबधि, घर आँगन ऊ बनोलिन कहिया।
सास ससुर नहि ननद जेठौनि जाए बैसत धिया केकरा ठहिआ।।
बूढ बडद उकपाल गोल एक, सम्पति भांगक झोरिया।
भइन विद्यापति सुनु हे मनाइल, शिव सन ढाली जगत के कहिया।।23।।

8209837844
www.ugc-net.com

पद संख्या: 24

माधव, बहुत मिमती कर तोय।
दए तुलसी तिल देह समर्पितु, दया जनि छाड़बि मोय।।
गनइल दोसर गुन लेख न पाओवि, जब तुहूँ करबि विचार।
तुहूँ जगत जगनाथ कहाओसी, जग बाहिर जेड छार।।
किए मानुस मसु पास्वि भए जनभिए, अथवा कीट पंतग।
करम-विपाक गतागतपुनु पुनु, मति रह तुअ परसंग।।
भइन विद्यापति अतिसिय कातर तरइत इह भव-सिंधु।
तुअ पद पल्लव करि अवलम्बन तिल एक देह दिन
बन्धु।।24।।

8209837844

www.ugc-net.com

पद संख्या: 25

तातल सैकत बारि-बिंदु सम, सुत-मित-रमनि-समाज।
तोहे बिसरि मन ताहे समरपिनु, अब मझु हो कोन काज।।
माधव, हम परिणाम निरासा, तुहूँ जगतारण दीन दयामय।
अतय तोहर बिसबास।
आध जनम हम नींद गमायनु, जरा सिसु कत दिल गेला।
निधुबन रमनिरभस रंग मातनु , तोहे भजब कोन बेला।।
कत चतुरानन भरि भरि जाओत, न तुअ आदि अवसाना।
तोहे जनम पुन तोहे समाओत, सागर लहरि समाना।।
भनई विद्यापति सेष समन मय, तुअ बिनु गति नहि आरा।
आदि अनादिक नाथ कहाओसी उब, तारन भार तोहारा।।25।।

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com